खण्ड - अ

1. (a) दायीं ओर खिसकता है। 1

2. (d) नीचे की ओर ढलवां सीधी रेखा होगा। 1

3. बजट सेट दो वस्तुओं के उन सभी संभव संयोगों का समूह है जिन्हें उपभोक्ता अपनी आय और दी हुई कीमतों पर पाने में समर्थ है। 1

4. स्वच्छता बिमारी को दूर करती है और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इससे काम से अनुपस्थिति कम होती है, कार्यकुशलता बढ़ती है और देश की उत्पादन क्षमता बढ़ती है। अतः उत्पादन संभावना वक्र दांयी ओर खिसक जाएगी। 3

अथवा

बड़ी मात्रा में विदेशी पूँजी के बाहर जाने से संसाधन घट जाएँगे और देश की उत्पादन क्षमता गिर जाएगी। इससे उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर खिसक जाएगी। (रेखाचित्र की आवश्यकता नहीं है।) 3

बड़ी मात्रा में विदेशी पूँजी के बाहर जाने से संसाधन घट जाएँगे और देश की उत्पादन क्षमता गिर जाएगी। इससे उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर खिसक जाएगी। (रेखाचित्र की आवश्यकता नहीं है।) 3

5. इस विशेषता की सार्थकता यह है कि अल्पाधिकारी बाजार में कोई उत्पादक वस्तु की कीमत और या उत्पादन के बारे में निर्णय लेते समय प्रतिद्वंदी उत्पादकों की संभव प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखता है। इस प्रकार अल्पाधिकारी बाजार में एक उत्पादक निर्णय लेने के लिए अन्य उत्पादकों पर निर्भर होता है। 3

6.

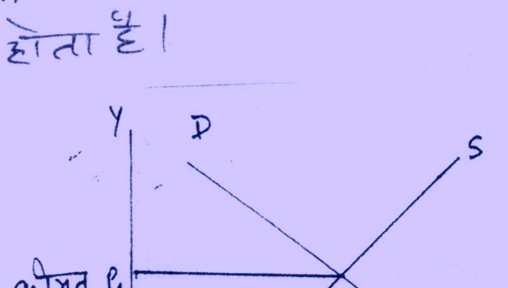

सरकार द्वारा किसी वस्तु की कीमत पर उच्चतम सीमा लगाना ही उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण कहलाता है। उदाहरण के लिए रेखाचित्र में OP उच्चतम कीमत सीमा है और OP_1 संतुलन कीमत है। इस कीमत पर उत्पादक PA (या OQ_1) मात्रा सप्लाई करना चाहते हैं जबकि उपभोक्ता PB (या OQ_2) मात्रा खरीदना चाहते हैं। इस उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण से वस्तु की सप्लाई AB (Q_1Q_2) कम हो गई। ऐसी स्थिति में काला बाजारी हो सकती है। 2

दृष्टिहीन परिक्षार्थियों के लिए:

उपभोक्ता से जो कीमत एक वस्तु के उत्पादक ले सकते हैं उस पर सरकार द्वारा एक अधिकत्तम सीमा लगाने को उच्चतम कीमत सीमा निर्धारण कहते हैं। 1

उच्चत्तम कीमत सीमा संतुलन कीमत से कम होती है इसलिए माँग बढ़ जाती है और पूर्ति कम हो जाती है। इससे काला बाजारी हो सकती है। 2

7. सामान्य वस्तु की कीमत और माँग में विपरीत सम्बन्ध होने के कारण माँग की कीमत लोच के माप में ऋणात्मक चिन्ह होता है जबकि ~~का~~ पूर्ति की कीमत लोच के माप में धनात्मक चिन्ह होता है ~~क्योंकि~~ वस्तु की ~~पूर्ति~~ कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। 3

8.

वस्तु X	वस्तु Y	सीमान्त रूपान्तरण दर
0	20	-
1	18	2Y : 1X
2	14	4Y : 1X
3	8	6Y : 1X
4	0	8Y : 1X

1½

क्योंकि सीमान्त रूपान्तरण दर बढ़ रही है इसलिए उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर ढलवां अवतल होगी 1½

9	**कीमत**	**व्यय**	**माँग**
	4	100	25
	2	100	50	1½

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{कीमत}}{\text{माँग}} \times \frac{\Delta \text{माँग}}{\Delta \text{कीमत}}$$ 1

1

$$= \frac{4}{25} \times \frac{25}{-2}$$ ½

$$= -2$$

10 अर्थशास्त्र में आगतों पर किए गए व्यय, मालिक द्वारा प्रदान की गई आगत सेवाओं पर अन्तर्निहित व्यय और सामान्य लाभ के योग को लागत कहते हैं। 1

यदि सी॰ लागत < औ॰ परिवर्त्ती लागत तो औ॰ प॰ ला॰ घटेगी

यदि सी॰ लागत = औ॰ प॰ लागत तो औसत प॰ लागत स्थिर रहेगी।

यदि सी॰ लागत > औ॰ प॰ लागत तो औ॰ प॰ ला॰ बढ़ेगी 1×3

(रेखाचित्र की जरूरत नहीं है)

अथवा

उत्पादन के बाजार मूल्य को अर्थशास्त्र में संप्राप्ति कहते हैं। या उत्पादन के बेचने मिली राशी। 1

यदि सी॰ संप्राप्ति > औ॰ संप्राप्ति तो औ॰ संप्राप्ति बढ़ेगी

यदि सी॰ संप्राप्ति = औ॰ संप्राप्ति तो औ॰ संप्राप्ति स्थिर रहेगी 1×3

यदि सी॰ संप्राप्ति < औ॰ संप्राप्ति तो औ॰ संप्राप्ति घटेगी

(रेखाचित्र जरूरी नहीं है)

11

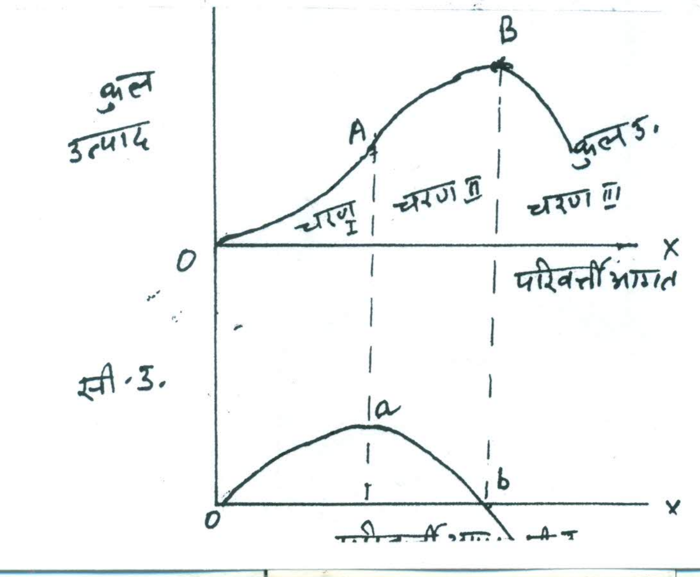

3

चरण I : कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर से बढ़ता है। सीमान्त उत्पाद बढ़ता है। रेखाचित्र में ऐसा A बिन्दु तक होता है

चरण II : कुल उत्पाद घटती हुई दर से बढ़ता है और सीमान्त उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक होता है। A से B तक

चरण III : कुल उत्पाद घटता है। सी. उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है। यदि स्थित B बिन्दु के बाद की है 3

केवल दृष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए

परिवर्ती आगत	कुल उ.	सी. उत्पाद
1	6	6
2	20	14
3	32	12
4	40	8
5	40	0
6	37	-3

3

चरण I : कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है, सीमान्त उत्पाद बढ़ता है 2 इकाई तक

चरण II : कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है और सी. उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक होता है। 3 से 5 इकाई तक।

चरण III : कुल उत्पाद घटता है और सी. उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है। 6 इकाई से आगे। 3

12 संतुलन की स्थिति दी हुई है। पूर्ति में वृद्धि होती है।

कीमत अपरिवर्तित रहने पर पूर्ति आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होगी।

पूर्ति आधिक्य के कारण विक्रेताओं में प्रतियोगिता होगी जिससे कीमत घटेगी

कीमत घटने से माँग बढ़ेगी और पूर्ति घटेगी।

ये परिवर्तन तब तक होते रहेंगे जब तक बाज़ार फिर से संतुलन की स्थिति में नहीं पहुँचता। 6

13. कीमत$_x$ = कीमत$_y$ = 3 और सी. प्रतिस्थापन दर = 3

जब उपभोक्ता संतुलन में होता है तब

$$\text{सी. प्र. दर} = \frac{\text{की.}x}{\text{की.}y}$$

दिए हुए मूल्यों के आधार पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है ; सी. प्र. दर $> \frac{\text{की}x}{\text{की}y}$ क्योंकि $3 > \frac{3}{3}$ 3

सी. प्र. दर के कीमतों के अनुपात से अधिक होने का अर्थ है कि उपभोक्ता बाजार की तुलना x वस्तु की एक और इकाई के लिए अधिक देने को तैयार उपभोक्ता x की अधिक इकाई खरीदना शुरू कर देगा। ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सी. प्रतिस्थापन दर ~~घटेगी~~ घटने लगेगी और यह कीमतों के अनुपात के बराबर हो जाएगी। उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में पहुँच जाएगा। 3

(रेखाचित्र नहीं चाहिए)

अथवा

कीमत$_x$ = 4 कीमत$_y$ = 5 सी.उ.$_x$ = 5 सी.उ.$_x$ = 4

उपभोक्ता के संतुलन की स्थिति में $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x} = \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की.}y}$ 3

दिए हुए मूल्यों के आधार पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है क्योंकि $\frac{5}{4} > \frac{4}{5}$ यानि $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x} > \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की.}y}$

x की प्रति रु. सी.उ. > y की प्रति रु. सी.उ.

उपभोक्ता x को अधिक और y की कम मात्रा खरीदना शुरू कर देगा। इसके फलस्वरूप सी.उ.x घटेगी और सी.उ.y बढ़ेगी। उपभोक्ता की यह प्रतिक्रिया उस समय तक जारी रहेगी $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{की.}x}$ और $\frac{\text{सी.उ.}y}{\text{की}y}$ बराबर न हो जाए।

इनके बराबर होने पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में आ जाएगा। 3

1 B

उत्पादक के संतुलन की दो शर्तें हैं :

(i) सीमान्त लागत = सीमान्त संप्राप्ति और

(ii) संतुलन के बाद सी. लागत > सी. संप्राप्ति

मान लीजिए सी. ला. > सी. संप्राप्ति। ऐसी स्थिति में सीमान्त लागत औसत सीमान्त संप्राप्ति में सापेक्षिक परिवर्तनों के अनुसार उत्पादन में परिवर्तन करना लाभप्रद होगा। ये परिवर्तन तब तक किए जाएँगे जब तक सी. ला. और सीमान्त संप्राप्ति बराबर न हो जाए। सीमान्त लागत यदि सीमान्त संप्राप्ति से कम है तो उत्पादक के लिए उत्पादन बढ़ाना लाभप्रद होगा। वह तब तक उत्पादन बढ़ाएगा जब तक सी. ला. और सी. संप्राप्ति बराबर न हो जाएँ। 3

उत्पादक के संतुलन के लिए सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति की समानता पर्याप्त शर्त नहीं है। मान लीजिए सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति का व्यवहार इस प्रकार का है कि एक और इकाई का उत्पादन करने पर सीमान्त लागत सीमान्त संप्राप्ति से कम हो जाती है। इस स्थिति में फर्म के लिए उत्पादन बढ़ाना लाभप्रद होगा। अतः सी. ला. और सी. संप्राप्ति की समानता संतुलन की स्थिति सुनिश्चित नहीं करती। लेकिन यदि उत्पादन के ऐसे स्तर पर सीमान्त लागत और सीमान्त संप्राप्ति बराबर हैं जिसके बाद उत्पादन बढ़ाने पर सीमान्त लागत सीमान्त संप्राप्ति से अधिक है तो उत्पादक के लिए उतना उत्पादन करना सबसे अधिक लाभप्रद होगा जिस पर सी. ला. और सी. संप्राप्ति बराबर हैं। 3

खण्ड – क

15	(a) में वृद्धि होने की संभावना है।	1
16	(b) राजकोषीय घाटा	1
17	(c) लाभांश	1
18	अर्थव्यवस्था में एक निश्चित अवधि में किए जाने वाले अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के प्रत्याशित उत्पादन के मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं।	1
19	(b) $\frac{1}{\text{सी. बचत प्र.}}$	1
20	'पूँजी खाते लेखा' में दर्ज किए जाने वाले लेन देन के विस्तृत वर्ग: (1) विदेशों से और विदेशों को उधार (2) विदेशों से और विदेशों में निवेश (3) विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधि में वृद्धि और कमी अथवा चालू लेखा में दर्ज किए जाने वाले लेन देन के विस्तृत वर्ग: (1) वस्तुओं का निर्यात और आयात	1×3

[illegible] किया जाता है। इससे विदेशी विनिमय [illegible] अतः इसे जमा की ओर दिखाया जाता है। $1\frac{1}{2}$

$$\text{[illegible]न. देशीय उ.} = \frac{\text{मौद्रिक स. देशीय उ.}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100 \quad 1\frac{1}{2}$$

$$300 = \frac{330}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100 \quad 1$$

$$\text{[illegible]त सूचकांक} = \frac{330 \times 100}{300} = 110 \quad \frac{1}{2}$$

[illegible] अन्तिम उत्तर दिया हो तो कोई अंक न दें)

	विदेशों को [illegible]
21	लेखा में दर्ज [illegible] प्राप्त होता है [illegible]
22	वास्तविक [illegible]
	कीम[illegible]
	(यदि केवल [illegible]

23	अधिक बैंक खाते खोलने से, बैंक जमाएँ अधिक होंगी। अधिक जमाओं से वाणिज्यों बैंकों की ऋण देने की सामर्थ्य बढ़ जाती है। बैंकों द्वारा अधिक ऋण देने से देश में अधिक निवेश होता है। अधिक निवेश से राष्ट्रीय आय बढ़ती है।	4
24	रा. आय = स्वायत्त उपभोग + सी.उ.प्र. (रा.आय) + निवेश	1½
	2000 = 400 + सी.उ.प्र. (2000) + 200	2
	सी.उ.प्र. = $\frac{2000-400-200}{2000}$ = 0.7	½
	(यदि केवल अन्तिम उत्तर दें तो कोई अंक न दें)	
25	देश में करेंसी जारी करने का अधिकार केवल केन्द्रीय बैंक को होता है। इससे वित्तीय प्रणाली में कुशलता बढ़ती है। इससे करेंसी संचालन में एकरूपता आती है और मुद्रा पूर्ति पर केन्द्रीय बैंक का नियंत्रण हो जाता है।	4
	अथवा	
	केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंकर के रूप में कार्य करता है। यह सरकार के लिए प्राप्तियाँ स्वीकार करता है और भुगतान करता है। यह सरकार के लिए विनिमय संबंधी, प्रेषण और अन्य सामान्य बैंकिंग कार्य करता है। यह सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन करता है और सरकार को ऋण भी देता है।	4
26	<u>स्फीतिकारी अंतर</u> : समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो इस अन्तर को स्फीतिकारी अंतर कहते हैं।	2
	पुनर्खरीद दर वह ब्याज दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक कम अवधि के लिए वाणिज्य बैंकों को ऋण देता है। जब केन्द्रीय बैंक पुनर्खरीद दर बढ़ाता है तो वाणिज्य बैंकों को केन्द्रीय बैंक से ऋण लेना महँगा हो जाता है। इस कारण वह	

अपनी ब्याज दर भी बढ़ा देते हैं जिससे बैंकों से ऋण लेना महँगा हो जाता है। अत: लोग कम ऋण लेते हैं और कुल व्यय कम हो जाता है। इससे स्फीतिकारी अन्तराल कम हो जाता है। 4

अथवा

<u>अपस्फीतिकारी अंतर</u>: जब अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोज़गार के स्तर पर समग्र पूर्ति से कम होती है तो इस अंतर को अपस्फीतिकारी अंतर कहते हैं। 2

<u>खुले बाजार के कार्यकलाप</u> : केन्द्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदने व बेचने को खुले बाजार के कार्यकलाप कहते हैं। केन्द्रीय बैंक बाजार से सरकारी प्रतिभूतियाँ खरीदकर अपस्फीतिकारी अन्तर को कम कर सकता है। जो इन प्रतिभूतियों को बेचते हैं उन्हें केन्द्रीय बैंक चैक द्वारा भुगतान करता है। ये चैक वाणिज्य बैंकों में जमा कराए जाते हैं। इससे बैंको ऋण देने की सामर्थ्य बढ़ जाती है, वे अधिक ऋण देते हैं। खर्चा बढ़ जाता है और अपस्फीतिकारी अन्तराल कम हो जाता है। 4

27 सरकार संसाधनों के आवंटन को करों, आर्थिक सहायता द्वारा और स्वयं उत्पादन करके प्रभावित कर सकती है। शराब, सिगरेट जैसी हानीकारक वस्तुओं का उत्पादन करने वाली उत्पादन इकाईयों पर अधिक कर लगा सकती है। जनता के लिए वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए करों में रियायत और आर्थिक सहायता दे सकती है। ऐसी वस्तुओं और सेवाओं का स्वयं उत्पादन कर सकती है जिनसे पर्याप्त लाभ न मिलने के कारण निजी क्षेत्र इनका उत्पादन नही करता। 6

28	(i) फर्म द्वारा चार्टर्ड अकाउन्टेंट को फीस का भुगतान फर्म की मध्यवर्ती लागत है। इसलिए इसे राष्ट्रीय में शामिल नहीं किया जाएगा।	2
	(ii) फर्म द्वारा निगम कर का भुगतान एक हस्तांतरण भुगतान है, इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता।	2
	(iii) फर्म द्वारा स्वयं उपयोग के लिए खरीदा गया फ्रीज निवेश व्यय है इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।	2
29	का. ला. पर निवल देशीय उ. = ii + ix + iv − iii − viii	1½
	= 800 + 200 + 100 − (−20) − 120	1
	= 1000 करोड़ रु.	½
	सकल रा. प्रयोज्य आय = का. ला. पर नि. दे. उ. + vi − v + viii − i	1½
	= 1000 + 50 − 10 + 120 − 15	1
	= 1145 करोड़ रु.	½